सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 174

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 37
अप्रैल – 2019

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों से,

गुढ़ीपाड़वा

प.पू. मो. जिलानी बाबा (05.04.1962)

आज साल का पहला दिन है, इसलिए खुशी मनाते है। आज के दिन हमारा फर्ज क्या है?गुजरे वर्ष में कितनी गलतियाँ की इसका पता लगाया है?गुजरे हुए वर्ष की बात छोड़ दो? लेकिन आज कितनी गलतियाँ की यह देखा? आज तो गलती नहीं होनी चाहिए। यहाँ आने वाली विभूति तुम्हारे जीवन को ठीक करने आई है। एक बार इस फकीर को जुबान दी, तो मरने के पहले हाथ पकड़कर पूछूँगा कि आपने जाप पूरा करने का वादा किया था? लेकिन जाप संकल्प के अनुसार नहीं हुआ। तुम्हारी मुरादे खुदा परवरिश करें? लेकिन बार बार गलती हुई तो कैसे चलेगा?आज किसी ने सोना खरीदा होगा, कपड़ा खरीदा होगा और घर में मिठाई बनी होगी। लेकिन आज के दिन का फर्ज क्या है?निम्नलिखित फर्ज हर एक भक्त ने पूरा करना चाहिए –

1) सुबह मंगल स्नान के बाद माँ बाप के पाँव छूकर उनको प्रणाम करना चाहिए। उन्होंने आप को जन्म दिया है।

इसलिए सबसे पहले उनके चरणों को हाथ लगाना और बाद में हमसे मिलना। यह आदत डालनी चाहिए। जिंदगी में खुशी का दिन आया, तो उन्हीं को पहले वंदन, क्योंकि वे आपके आराध्य दैवत है। सर्व प्रथम माँ बाप बाद में हम।

2) आज घर के चूल्हे पर मीठा खाना बनाया होगा। भक्तिभाव से उस चूल्हे की पूजा होनी चाहिए। वहाँ अपना अन्नोदक लिखा है। घर की सुहागन स्नान करके उसे गंध फूल चढ़ाए। अग्नि जैसा धर्म नहीं एक आदमी हो या पचास आदमी, सबका खाना वो पकाता है।

3) लक्ष्मी (अंगूठी) सरस्वती (कलम, पाठशाला की किताबें) इनका पूजन होना चाहिए। आप को सुख शांति मिले इसलिए लक्ष्मी और सरस्वती आपके घर में है। उनकी संभावना ना करने आप यहाँ कैसे आते हो?

4) साधन पत्रिका, साध्यता के लिए दी हुई पोथी, और जप माला जोकि तुम्हारी जीवन नैय्या है जो तुम्हें इस तीर से उस तीर तक ले जाने वाली है, उस जप माला की भी पूजा होनी चाहिए।

5) संदल प्रसाद का पूजन होना चाहिए।

गुजरे हुए वर्ष में जितनी गलतियाँ नहीं हुई उतनी गलतियाँ एक दिन में हुई। इन गलतियों का अंदाज लेकर अपने मन को पूछो कि मेरे लिए मैंने क्या दिया है। दुआ की जरूरत है, इसलिए यहाँ आए। बाहर की दुनिया को कौन दुआ देगा? तुमने दुआ पायी है यह आत्मविश्वास तुम्हारे पास है क्या? दुआ पायी इसका मायना यह है कि, पिछले वर्ष तुम्हारे जीवन में पाँच–नुकसान की बातें थी, उनमें से दो बातें इस वर्ष में नहीं रहेगी हमारे लिए, घर के लिए दुनिया के लिए मेरे पास क्या बुरा है इस बात का पता लगेगा, तब क्या अच्छा चाहिए यह मालूम होगा। तुमको जैसी दुआ मिलती है वैसे बाहर की दुनिया को भी मिलती है। बाहर की दुनिया भी किसी दैवत की भक्ति करती है। तो यहाँ दुआ पाने के बाद वह दुआ अन्य दुनिया वालों को आप दोगे यह आपका ख्याल गलत है। दुनिया में ऐसी एक भी चीज़ नहीं कि जिसको दुआ मिलती नहीं। तुमको दिन–रात दुआ लगती है तो तुम दूसरों को क्या दोगे? तुमको दुआ है वैसे ही अन्य लोगों को भी दुआ है। तो फिर क्या फर्क है? दुनिया चलती है कि गत वर्ष में हमें ये बातें मिली, अब इस वर्ष में ऐसी बातें कितनी मिलेगी और तुम चाहते हो कि इस बात के अलावा भी कोई

चीज है, वह तुमको मिले। बाबा ने तुम्हारी 'काया,वाचा' ठीक की। अब मन तुम्हें ही ठीक करना होगा। तुम्हारा मन ना मैं ठीक कर सकता हूँ, या ना कोई अल्लाह या परवरदिगार। उस बाबा ने संकल्प देकर इस काया, वाचा से गत पच्चीस जन्म का भी पाप धोने का हवाला दिया है लेकिन तुम्हारा मन साफ करने का इलाज उन्होंने नहीं दिया। तुम्हारे अज्ञान से इसी जन्म में तुमने तुम्हारा मन खराब किया है, अब वह साफ तुम्हें ही करना चाहिए। मन साफ होने के लिए पारायण शुरू किया है। तीन वर्ष पहले और आज हो रहा पारायण इसमें कोई फर्क मालूम होता है या नहीं। तब तीन भक्त की पारायण होना चाहिए ऐसी इच्छा थी, और बाकी छः भक्त मजबूरी से संख्या पूरी करने के लिए पारायण को बैठते थे। पारायण करके हमने तीन भक्तों की इच्छा का विमोचन किया और साथ–साथ छःभक्तों की वासना का भी विमोचन किया। अब जो पारायण हो रहा है, उसमें प्रारंभ ही वासना का विमोचन करते है और इसलिए संकल्प से यह पारायण करने से ऐहिक सुख की अपेक्षा जीवन में न आए इसलिए प्रार्थना करते है। घर की सास मरने के बाद उसने शिवलीलामृत का पारायण कर जो पुण्य जोड़ा है, वह उनके साथ जाता है लेकिन उनका 10 तोला सोना उनकी बहू को मिलता है। सास की इच्छा उनके साथ चली गई, वासना यहीं रही। यह जीवात्मा वासना रखता है, इसलिए उसको श्राद्धपक्ष की जरूरत होती है। तो आज आप लोग हमें वासना से मिलते है, या इच्छा से। हाजी हजरत मलंग बाबा के जमाने में लोग 12 आना सेवा करते थे, खुद का विमोचन अपने आप करते थे और चार आने की दुआ माँगते थे (तब एक रूपया 16 आने का होता था।) अतः खुदा ने हाजी बाबा को चार आना दिया (मतलब ¼) मोहमद जिलानी साहब के वक्त जमाना बदल गया। दुनिया आठ आने की सेवा करके आठ आने की दुआ माँगती थी। इसलिए खुदा ने उनको आठ आना दिया साईबाबा के वक्त दुनिया चार आना सेवा और बारह आना दिया। साई बाबा के वक्त दुनिया चार आना सेवा और बारह आना दुआ माँगने लगी और इसलिए खुदा ने साई बाबा को बारह आना दिया। अब खुदा को मालूम हुआ कि आज कल लोग सेवा कुछ नहीं करते, लेकिन बंधे रूपये की दुआ माँगते है, इसलिए दादा को यानी समिति को बंधा रूपया मिला है। अब बोलो तुम्हारी निष्ठा संदल के प्रसाद पर है कि समिती पर? समिति की कार्यपद्धति के अनुसार संदल का अनुष्ठान लगाने से चार आना मिलता है और अनुष्ठान की पूर्तता के

लिए ग्यारह (11) माला "श्री साईबाबा" का जाप करने से बारह आना, कुल मिला के एक रूपया मिलता है। अब बोलो ज्यादा निष्ठा बाबा पर है या संदल के प्रसाद पूजन से इच्छा पूर्ति होनी चाहिए तो तुमको सिर्फ चार आना मिलेगा और तुमको खुद को बारह आने की दुआ कमानी होगी। हाजी मलंग बाबा के जमाने से आज तक आदमी के पास चार आना कम है इसलिए संदल का प्रसाद है और वासना के बारह आना कम है, इसलिए सद्गुरु नामस्मरण है। समिति की हर एक बात कायदे से (नियम से) चलती है। अब सोचो कि हम कहाँ है?हजरत बाबा की 800 वर्ष पहले हुकूमत हुई तब का यह प्रसाद है, फिर सिर्फ अनुष्ठान से काम होने के लिए तीन बार अनुष्ठान (4x3=12 आना) लगाना पड़ेगा। बाबा के ये हरे कपड़े में दिया हुआ प्रसाद में क्या क्या बातें छिपी हुई है ऐसा सवाल कभी बाबा को किया?आज तक संदल का अनुष्ठान काम के लिए लगाया। आम तौर पर लोगों ने फिकर (चिंता) के मारे अनुष्ठान लगाया और उनकी फिकर (चिंता) कम हुई। अब काम के लिए अनुष्ठान न लगाने के कारण, शायद काम नहीं हुआ होगा। तुमको सोच समझ है?तुम ज्ञानी हो, तब ऐसे कैसे अनुष्ठान लगाते हो? अगला वर्ष आपका खूब नसीब से गुजरे ऐसी दुआ देके आपकी विदा लेता हूँ।

।। शुभं भवतु।।

सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible